संदर्भ ग्रंथ-सूची

संदर्भ ग्रंथ-सूची

संदर्भ ग्रंथ सूची

अ) आधार ग्रंथ

अ.क्र.	लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम	प्रकाशन और प्रयुक्त संस्करण
1	चित्रा मुद्गल	ग्यारह लंबी कहानियाँ	प्रभात प्रकाशन, चावड़ी बाजार, दिल्ली - 110056, प्रथम संस्करण - 1987
2	चित्रा मुद्गल	चर्चित कहानियाँ	सामायिक प्रकाशन, 3543 जटवाडा, दरियागंज, नई दिल्ली - 110002 प्रथम संस्करण-2004

आ) सहायक ग्रंथ

1	चित्रा मुद्गल	एक जमीन अपनी	प्रभात प्रकाशन, चावडी बाजार, दिल्ली - 6, प्रथम संस्करण - 1990
2	चित्रा मुद्गल	आवां	सामायिक प्रकाशन, 3543, जटवाडा, दरियागंज, नई दिल्ली प्रथम संस्करण - 1999
3	चित्रा मुद्गल	गलिगडु	सामायिक प्रकाशन, 3543, जटवाडा, दरियागंज, नई दिल्ली प्रथम संस्करण - 2002
4	चित्रा मुद्गल	दस प्रतिनिधि कहानियाँ	किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण-2006
5	चित्रा मुद्गल	मेरी प्रिय रचना : जगदंबा बाबू गांव आ रहे हैं	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, प्रथम सं.-1989

इ) संदर्भ ग्रंथ :

अ.क्र.	लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम	प्रकाशन और प्रयुक्त संस्करण
6	अश्क (डॉ.) उपेंद्रनाथ	हिंदी कहानी : एक अंतरंग परिचय	नीलम प्रकाशन, इलाहाबाद प्रथम संस्करण 1667
7	आदवानी (डॉ.) मालती	लेखिकाओं के नवें दशक की हिंदी कहानियों में पारिवारिक	सार्थक प्रकाशन, प्रथम संस्करण-1999
8	गुलाबराय (डॉ.)	काव्य के रूप	प्रतिभा प्रकाशन, 2006 हैरकुल, दिल्ली, तृतीय संस्करण-1954
9	टंडन (डॉ.) प्रताप नारायण	हिंदी कहानी कला	हिंदी समिति प्रकशन, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ, प्रथम संस्करण-1970
10	प्रकाश (डॉ.) बिजली प्रभा	जैनेंद्र के उपन्यासों में नारी चरित्रों का मनोवैज्ञानिक धरातल	क्लासिक पब्लिशिंग कम्पनी नई दिल्ली प्रथम संस्करण-1991
11	भटनागर (डॉ.) प्रेम	हिंदी उपन्यास शिल्प : बदलते परिप्रेक्ष्य	अर्चना प्रकाशन, गालपुरा, जबलपुर प्रथम संस्करण-1968
12	मिश्र (डॉ.) शिवकुमार	मार्क्सवादी साहित्य चिंतन	हिंदी ग्रंथ अकादमी, मध्य प्रदेश, प्रथम संस्करण- 1973
13	लाल (डॉ.) लक्ष्मीनारायण	हिंदी कहानियों की शिल्पविधी का विकास	साहित्य भवन प्रा.लि. इलाहाबाद, तृतीय संस्करण-1967
14	व्होरा (डॉ.) आशारानी	नारी शोषण-आईने और आयाम	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, प्रथम संस्करण-1983

अ.क्र.	लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम	प्रकाशन और प्रयुक्त संस्करण
15	शर्मा (डॉ.) सुमित्रा	कौशिक जी का कथा साहित्य	साहित्य प्रकाशन, मालीवाडा दिल्ली - 6, प्रथम संस्करण-1968
16	सक्सेना (डॉ.) आर्दश	हिंदी के आंचलिक उपन्यास और उनका शिल्प-विधि	सूर्य प्रकाशन, बिकानेर प्रथम संस्करण-1971
17	सिंह (डॉ.) त्रिभुवन	हिंदी उपन्यास शिल्प और प्रयोग	हिंदी प्रचारक संस्थान, पो.बॉ.नं. 106, पिश्चमोचन वाराणसी, प्रथम संस्करण-1973
18	सिंह (डॉ.) सुरेश	हिंदी कहानी : उद्भव और विकास	अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-1967

उ) हिंदी शब्द कोश -

19	Oxford	Oxford Dictionary of current English	--
20	(सं.) प्रसाद कालिका	हिंदी शब्द कोश	राजपाल एण्ड सन्स कश्मीरी गेट, नई दिल्ली, संस्करण-2000
21	बाहरी (डॉ.)	राजपाल हिंदी शब्दकोश	राजपाल एण्ड सन्स कश्मीरी गेट, दिल्ली, संस्करण-2004

ऊ) पत्र एवं पत्रिकाएँ

1	नवभारत टाईम्स		1 अगस्त, 1993, 18 दिसम्बर, 1994, 14 जनवरी, 1995

ए) पत्रिकाएँ –

अ.क्र.	संपादक	पत्रिकाएँ	प्रकाशन एवं स्थान
1	कालिया (सं.) रविंद्र	वागर्थ	2005
2	कालिया (सं.) रविंद्र	वागर्थ	2005
3	गोपालराय (सं.) हरदयाल	समीक्षा	1993
4	देव (सं.) विजयकुमार	अक्षरा	2004
5	भटनागर (सं.) हरि	साक्षात्कार	2005
6	भटनागर (सं.) हरि	साक्षात्कार	2004
7	राय(सं.) रामकमल तिवारी	हिन्दी अनुशीलन	2003
8	विद्याअलंकार (सं.) वि.सा.	प्रकर	1961
9	श्रोत्रिय (सं.) प्रभाकर	नया ज्ञानोदय	2004

□□□□

परीशिष्ट

[redacted] चित्रा मुद्गल, B-105, वर्धमान अपार्टमेन्ट्स, मयूर विहार
फेज - I, दिल्ली - 91 दूरभाष - 011/22711371

प्रिय कृपाली,
आशीष।

तुम्हारा 17 मार्च 07 का पत्र मिला। मुझे खुशी है कि तुम 'चर्चित कहानियाँ' एवं 'ग्यारह लंबी कहानियाँ' पर एम. फिल कर रही हो। मुझे पूरा विश्वास है कि तुम उन कहानियों को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं भावनात्मक और द्वन्द्वात्मक स्तर पर सही रूप में व्याख्यायित कर सकोगी। तुम जब अपना लघु शोध पूरा कर लोगी तो बेटे उसकी एक प्रति मुझे अवश्य भेजना। तुम स्थानीय पुस्तक विक्रेता से 'चेहरे' कथा संकलन (पेंग्विन-यात्रा से प्रकाशित) भी मंगवा सकती हो। इधर 'इरावती' कथा पत्रिका में मेरी एक कहानी 'सोया' एवं कथाकार उर्मिला शिरीष द्वारा लिया गया बहुआयामी लंबा साक्षात्कार प्रकाशित हुआ है। उसका पता है

संपादक - राजेन्द्र राजन
'इरावती'
बी-IV, टीका चेलियां
धर्मशाला - 176215
(हिमाचल प्रदेश)
मोबाइल (संपादक) 09816410981

'चेक या ड्राफ्ट - 30 रुपये का 'Editor Iravati Dharamsala' के नाम से भेज कर मार्च 07 का यह अंक मंगवा सकती हो। बहुत कुछ उसमें से तुम्हें मिल सकता है।

इन संग्रहों की समीक्षा मुझे ढूंढनी होगी। मिल गयी तो भेजूंगी। प्यार सहित। डा. आशा मणियार को नमस्कार। उनका निर्देशन तुम्हारी बहुत सहायता करेगा।
तुम्हारी [illegible]
22/3/07

PHILATELY: KING OF HOBBIES
Collect Postage Stamps
CONTACT:
Nearest Philatelic Bureau

50
भारत INDIA

पोस्ट कार्ड POST CARD
प्र.मु. / S.P.P. - 2004

प्रति/सुश्री कृपाली तुकाराम -
नवीन पोलिस लाईन, जंगम
30/2, हेड क्वार्टर्स, कसबा
बावडा, कोल्हापुर -
पिन PIN 416004
(इस लाइन के नीचे न तो लिखें और न ही मुद्रित करें Do not write or print below this line)
महाराष्ट्र

◻ चित्रा मुद्गल, B-105, वर्धमान अपार्टमेन्ट्स, मयूर विहार
फेज-I, दिल्ली-91 ◻ आवास दूरभाष -
011-22711371
M. 9873123237

प्रिय रुपाली,

आशीष!

नए वर्ष पर तुम्हें बहुत-बहुत प्यार और हार्दिक शुभ-कामनाएँ। जिन्दगी को तकलीफों में भी तुम उसे खुशबू की तरह जी सको - यही कामना है तुम्हारे लिए।

रुपाली, मैं 14 दि. को औरंगाबाद जा रही हूँ मराठी लेखिका सम्मेलन में सम्मिलित होने। तुम वहाँ से दूर हो नहीं तो मुलाकात होती। ◻

उम्मीद है तुम्हारा शोध कार्य ठीक चल रहा होगा। परिश्रम कभी व्यर्थ नहीं जाता।

खूब व्यस्तता के चलते उत्तर में विलंब हुआ - अन्यथा नहीं लोगी, विश्वास है।

माता, पिता, भाई बहनों को मेरा स्नेह देना।

तुम्हारी

[signature]

11/11/07 दिल्ली

म.प्र./S.P.P., HYD.-2006 पोस्ट कार्ड POST CARD

Philately: King Of Hobbies
COLLECT INDIA POSTAGE STAMPS
CONTACT Nearest Philatelic Bureau

To
रुपाली तुकाराम जंगम.
नवीन पोलीस लाईन, 30/2
हेडक्वार्टर्स कसबा बावडा
कोल्हापूर

पिन PIN 4 1 6 0 0 3

(इस लाइन के नीचे न तो लिखें और न ही मुद्रित करें Do not write or print below this line)

कोल्हापूर (महाराष्ट्र)

प्रिय कृपाली,
आशीष!
तुम्हारे प्रश्नोत्तर भेज रही हूँ। जानती हूँ, मेरी लिखावट पढ़ पाना तुम्हारे लिए मुश्किल होगा। निकालोगी। बहुत व्यस्तता है बेटे। दिल्ली आकर साक्षात्कार लेती तो अधिक बेहतर होता।

मुझे विश्वास है तुम एक रोज़ बहुत आगे जाओगी। अपने माता पिता को यह एहसास दिलाओगी कि लड़कियाँ किसी से कम नहीं होतीं।

जितना परिश्रम लड़कियाँ कर सकती हैं - लड़के निश्चय ही नहीं कर सकते। इतना परिश्रम कर लेने की ताकत सिर्फ उनमें ही है। पता नहीं, मैं ठीक से उत्तर दे पाई हूँ या नहीं कृपाली मगर तुम उसे पूरा कर लोगी।

(2)

- फोटो भेज रही हूँ।
- एम. फिल. की एक प्रति तुम मेरी फाइल के लिए बाइन्ड करवा कर भिजवाओगी। अपनी एक तस्वीर भी उसमें रख देना।

पत्र का उत्तर शीघ्र देना ताकि मैं निश्चिन्त हो सकूँ कि सामग्री तुम तक पहुँच गयी।

~~तुम्हारी लिखावट बहुत सुन्दर है~~। मैंने यह एक पंक्ति लिखकर तुम्हें यह बताना चाहा है कि मैं भी सुन्दर लिख सकती हूँ तुम्हारी तरह मगर —

इस वक्त रात का एक बज रहा है। आँखों में नींद उतर रही है।

प्रश्नावली

("ग्यारह लंबी कहानियाँ" तथा "चर्चित कहानियाँ" के विशेष संदर्भ में)

1) उपन्यास से अधिक आपने कहानियों को ही लिखा है ? ऐसा क्यो ?

उपन्यास का फलक और उसकी सर्जना लेखक से उसके लेखन के समय उसकी सम्पूर्ण एकाग्रता और समर्पण चाहते हैं। एक दो पात्रों के द्वन्द्वात्मक संघर्ष और उसके मनोविज्ञान से गुजरना उतना श्रम साध्य नहीं है जितना समाज के किसी वर्ग की प्रवृत्तियों और प्रकृति के संघर्ष को रेखांकित करने का होता है। लम्बे समय की साधना के उपरांत जाकर कहीं मुझे लगा कि अब मैं उपन्यास लिख सकती हूँ। मैं वह तना, गहरी जड़ों के साथ गढ़ सकती हूँ जो वृक्ष की शाखाओं, प्रशाखाओं की उठान को भार को उठा सकता है। इसी लिए उपन्यास लिखने की मुझे कभी हड़बड़ाहट नहीं हुई।

(सजगता, संवेदनात्मकता,)

2) आपके विचार में साहित्य और जीवन का क्या संबंध है ?

जीवन के बिना साहित्य संभव नहीं है न साहित्य के बिना जीवन। साहित्य मनुष्य की चेतना की अभिव्यक्ति है। मनुष्य की चेतना ही उसके जीवन को सार्थक दिशा का बोध कराती है उसे सम्प्रेरित करती है कि वह अपने बहाने औरों को और औरों के बहाने अपने को तौले, परखे, आत्मविश्लेषण करे। उसके संघर्ष को अपना बनाए। उसके उत्पीड़न को खुद पर गुजरता हुआ महसूस करे।

3) संप्रति आपका लेखन किस विधा में जारी है ?

मैं अपने उपन्यास 'एक काली एक सफ़ेद' में उलझी हुई हूँ। जब कभी उस उलझाव से सांस लेने के लिए बाहर आना चाहती हूँ तो डायरी खोल लेती हूँ। कॉलम भी लिख रही हूँ 'भास्कर' में। लेकिन इस समय सिर्फ और सिर्फ उपन्यास में डूबी हुई हूँ।

4) इन दो कहानी संग्रहों में से कौनसी कहानी द्वारा आप अधिक मशहूर हुई ?

यह अचरज की बात है मेरी अधिकांश कहानियों ने छपते ही पाठकों के मन को गहरे उद्वेलित किया। पत्रिका के अंकों तक ऊपर चर्चा होती रही। चाहे 'भूख' हो या 'जगदंबा बाबू गाँव आ रहे हैं' हो या 'दुलहिन' हो या 'प्रेतयोनि' हो या 'दशरथ का वनवास' हो या 'शून्य' हो या ..... 'भूख', जगदंबा बाबू गाँव आ रहे हैं, प्रेतयोनि - आज तक चर्चा के केन्द्र में हैं।)

5) 'ग्यारह लंबी कहानियाँ' तथा 'चर्चित कहानियाँ' इन दो कहानी संग्रहों की कहानियों के पिछे आपका क्या उद्देश है ?

सामाजिक सरोकार ही मेरी रचनाओं का लक्ष्य है। चाहे वह व्यवस्था के धरातल पर आदमी को आदमी न समझे जाने का संघर्ष हो या उसके स्वयं के अन्तर्विरोध।

6) दोनों कहानी संग्रहों में से कौनसी कहानी आपको अधिक प्रभावित करती है ? क्यों ?

(आह्य)

जिस वक्त किसी कहानी का भ्रूण मेरी चेतना में विकसित हो रहा होता है और मैं अपनी सारी व्यस्तताओं के बावजूद उस भ्रूण की परिपक्वता और प्रसव की पीड़ा से जुड़ी हुई होती हूँ तो मुझे उन दिनों भी लगता है कि मैं शायद अपनी सबसे अच्छी कहानी लिखने जा रही हूँ।

यह कहना कठिन है कि पाठक 2

7) दोनों कहानी संग्रह में नारी समस्याओं में विधवा, परितक्त्या, अकेली नारियों की ही समस्यओं को चित्रित किया है इसके पीछे क्या प्रतिपादय है ?

मुझे लगता है आपने मेरी 'त्रिशंकु' नहीं पढ़ी न 'दशरथ का वनवास' न 'पेशा' न 'रुना आ रही है' न 'दुलहिन' न 'पाली का आदमी', न 'सुरख', न 'प्रेतयोनि'.. इन सारी कहानियों का आप केवल परित्यक्ता, अकेली नारियों, विधवाओं की समाजिक यथार्थ तक सीमित नहीं कर सकते। इसलिये देश की आधी आबादी यानि की स्त्री की जो सामाजिक दुर्दशा है उससे कोई लेखक मुँह कैसे मोड़ सकता है?

(न 'नानक आगे बढ़ेगा अभी')

8) 'जगदंबा बाबू गाव आ रहे है' इस एकही कहानी में राजनीतिक समस्या को दर्शाया है ऐसा क्यों ?

किसी एक ही विषय या में बंध कर नहीं लिख सकती। मनुष्य जिन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, भावनात्मक दबावों के भार में पिसता घुटता है - ये सारे आयाम मुझे उद्वेलित करते हैं और मेरी संवेदना को चुनौती देते हैं।

9) 'रुना आ रही है' इस कहानी द्वारा बुआ भतीजी के नये संबंधों को प्रस्थापित कर आप क्या दर्शाना चाहती है ?

समय का रिश्ता जब भी टूटता है - संबन्धों में ठहराव ही नहीं आती, उसकी ऊष्मा और विश्वास भी ठंडे पड़ने लगते हैं और दरअसल भ्रम के जाले इस कदर गहराते हैं कि हम अविश्वास और कुण्ठाओं को ही जीने लगते हैं। नयी पीढ़ी नयी आस के समान है। वह अतीत के अन्धेरों का होना नहीं चाहती, होती भी नहीं। वह अधिकाधिक खुली हुई है) के जाले।

(जीवन मान उन्हें ही)

(बुआ भतीजी के बीच ही नहीं, किसी अन्य संबन्धों में भी उपज सकते हैं?)

10) वर्तमान स्थितियों में नारी विमर्श स्त्री अस्मिता के वारे में आपके क्या विचार है ?

साहित्य में कुछ लोग स्त्री विमर्श को देह विमर्श की चासनी में डुबो रहे हैं जो विमर्श की दिशा को भटका रहा है। स्त्री को समाज में अब तक 'वस्तु' के रूप में देखा, परखा और इस्तेमाल किया जाता रहा है। उसे 'वस्तु' के रूप में नहीं, व्यक्तित्व युक्त स्वतंत्र मनुष्य के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। लेकिन हो यह रहा है कि 'वस्तु' की परिभाषा से मुक्ति की बात करने के बावजूद यौन स्वतंत्रता को ही स्त्री मुक्ति का पर्याय साबित किया जा रहा है जो स्त्री को पुनः 'वस्तु' की परिभाषा में ही ले जाकर पटक रहा है।

(उसका सबसे बड़ी है)

स्त्री के आत्मता [illegible] यह [illegible] स्त्री का सबसे बड़ा रोड़ा है। स्त्री को स्वयं ही अपना सं[illegible] प्रशस्त करना होगा मेरा पहला उपन्यास 'एक जमीन अपनी' स्त्री के इसी संघर्ष को उजागर करता है।

11) अपने झुग्गी झोपडियों में रहनेवाली लोगों के अभावग्रस्त जीवन को अधिक परिलक्षित क्यों किया है ?

इनकी देश के नागरिक होकर आदिवासी श्रमशील जन उपेक्षित क्यों हैं? इस देश की राजनीति में आदिवासी उनके जीवन की निर्णायक भूमिका है तो फिर वे मूलभूत हकों से वंचित शोषित अपने ही समाज में तिरस्कृत क्यों हैं? ये कुछ प्रश्न मेरे लिए हमेशा चिंतन के विषय हैं। मुझे लगता है इनकी इस दुनिया में कोई नहीं सोचते हैं।

12) मजदूरों की समस्याओं को चित्रित कर आप कौनसे संकेतों की ओर इशारा करना चाहती है ?

ऊपर वाला उत्तर ही इस प्रश्न का उत्तर है।

13) क्या महानगरीय जीवन में आया दो मुँहापन, आधुनिकीकरण का प्रभाव और उससे निर्मित समस्याओं के बारे में आपके कोई सुझाव एवं उपाय योजना है ?

समाज में बढ़ती अपसंस्कृति, स्त्री [illegible] पराधीनता ही व्यक्ति को स्वार्थी बना रही है। वह प्रकृति में इसका उपभोग करना चाहती रही है कि अपने हित सिद्ध करने के लिए कुछ भी कर सकता है। आधुनिकीकरण का अर्थ मशीनी करना नहीं है, मशीनों के साथ मशीनी हो जाना है। यह पश्चिमी जीवन शैली का अंधानुकरण है जिसे हम अपनी संस्कृति को ताक पर रखकर अपना रहे हैं। हम उससे विकास के नाम पर

14) रुढ़िवादिता को नष्ट करने के लिए आप कौनसे सुझाव देना चाहती है ?

अपनी चेतना के हवनकुंड को प्रज्वलित करो, इन रूढ़ियों से मुक्त हो सकते हैं।

15) क्या आप इन दो कहानी संग्रहों में से किसी पात्र में अपना प्रतिबिंब देखती है ?

लेखक अपनी दृष्टि के रूप में अपनी समस्त रचनाओं में उपस्थित होता है ऐसा मेरा मानना है। [illegible]

[illegible]

मेरा मानना है स्त्री देह नहीं, चेतन मस्तिष्क भी है। वह पुरुषों की भाँति उसके मस्तिष्क की पहचान ही उसे 'वस्तु' के दायरे से मुक्त करेगी।

उसमें मशीनों के अनुकूल ही नहीं आधारित करके हैं उनके गुणों को अपना कर अपने को अपने लोगे 'पिछड़ा' उनकी के दायरे से मुक्ति चाहते हैं। महानगर में अकेले रहते हैं। [illegible] संस्कृति ही हमारी पहचान है। साहित्यकार प्रचार प्रसार ही उन्हें संवेदनापूर्ण बना सकता है। साहित्य के माध्यम से अपनी संस्कृति और संस्कारों की प्रवृत्ति को सचेत हो सकते हैं कि कहाँ जा रहे हैं और क्या हो रहा है।

[illegible]

16) क्या इन कहानियों में से कोई प्रसंग आपके जीवन में घटित हुआ हैं ?

संभवतः नहीं।

17) संप्रति आपको कौनसे पुरस्कारों से सम्मानित किया है ? (कृपया पुरस्कारों के नाम बताए)

(1) उपन्यास 'आवां' को देश का प्रतिष्ठित सम्मान 'व्यास सम्मान' प्राप्त हुआ। 'व्यास सम्मान' पाने वाली मैं प्रथम हिन्दी साहित्यकार लेखिका हूँ।

(2) 'आवां' को ही 'सार्क साहित्य का प्रथम अंतर्राष्ट्रीय इन्दु शर्मा सम्मान' (साउथ एशियन कथा यूके लंदन द्वारा) भी प्राप्त हुआ है।

(3) 'आवां' को 2007 में हिमाचल प्रदेश का सर्वोच्च सम्मान 'शिखर सम्मान' भी 'आवां' को प्राप्त हुआ है।

(4) मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी का 'वीरसिंह देव' सम्मान भी उपन्यास आवां को प्राप्त हुआ।

(5) हिन्दी अकादमी दिल्ली का साहित्यकार कृति सम्मान भी उपन्यास आवां को प्राप्त हुआ।

(6) उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का साहित्य भूषण सम्मान

साहित्य में समग्र योगदान पर प्राप्त हुआ है।

(7) सामाजिक कार्यों के लिए बिड़ला सम्मान प्राप्त हुआ (कोमा फाउन्डेशन द्वारा)

(8) हिन्दी अकादमी दिल्ली द्वारा ~~[illegible]~~ कृति सम्मान - 'इस समाज में', 'बंगाल का राग (बाल कथा संकलन) को प्राप्त हुआ है।

आदि आदि....

(9) उपन्यास 'गिलिगडु' को गोयनका सम्मान

(10) उपन्यास 'गिलिगडु' को मध्यप्रदेश का चकल्लस सम्मान।

(10) उपन्यास 'एक ज़मीन अपनी' को 'महिला नारी रत्न सम्मान (शोलापुरी संगठन महाराष्ट्र)

[signature]
5/5/08 रात दस बजे

891.431
JAN
T15504